21

''हे परमेश्वर, हमें अगुवे दे !''

2 शमूएल 2-6; 23; 1 इतिहास 11-14

हमारे समय की पुकार है ''हे परमेश्वर हमें अगुवे दे!'' सरकार हो, घर, या फिर कलीसिया, हर जगह बात एक ही है। देश के सामने आने वाली चुनौतियों की बात करते हुए हम कहते हैं ''ईमानदार लोग अब कहां मिलते हैं? असली लीडर तो जैसे गायब हो गए हैं?'' आधुनिक परिवारों की समस्याओं पर पीड़ा व्यक्त करते हुए हम निष्कर्ष निकालते हैं ''आज लोग घरों में, विशेष कर आत्मिक बातों को प्राथमिकता नहीं देते।'' प्रभु की कलीसिया के सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा करते हुए, स्पष्टतया हम निष्कर्ष निकालते हैं, ''यदि हमारे बीच ऐसे अगुवे हों जैसे परमेश्वर चाहता है, तो वे चुनौतियों से निपट सकते हैं और इन्हें निपटा भी लेते।''

ये समस्याएं केवल हमारे देश में ही नहीं, पूरी दुनिया की हैं। उन लोगों से मिल कर जो विदेशों में जाते रहते हैं, किसी भी देश की बात करें, निष्कर्ष एक ही निकलेगा कि ''अच्छे नेतृत्व की बड़ी कमी है।'' सारा संसार पुकार रहा है, ''हे परमेश्वर, हमें अगुवे दे!''

नेतृत्व की आवश्यकता इस युग की ही नहीं है। परमेश्वर द्वारा स्वीकृत तथा परमेश्वर द्वारा सम्मानित नेतृत्व की कमी सदियों से रही है। निश्चय ही, राजा शाऊल की मृत्यु तथा दाऊद के राजा बनने के समय भी ऐसा ही था। पिछले पाठ में हमने देखा था कि जब पलिश्तियों से युद्ध के दौरान शाऊल मर गया, तो दाऊद के लिए गद्दी पर बैठने का रासता साफ़ हो गया। हमने जिस बात पर ध्यान नहीं दिया था,वह इस्राएल कौम की पराजय का विनाशकारी प्रभाव था।

पलिश्तियों के साथ इस दुर्भाग्यपूर्ण युद्ध से पहले इस्राएल में भी नेतृत्व की समस्या थी। शाऊल के 40 वर्ष के गैरज़िम्मेदाराना और सनकी शासन के दौरान देश राजनैतिक, आर्थिक तथा आत्मिक दृष्टि से कंगाल हो चुका था। अपने गोत्र के प्रति शाऊल के पक्षपात के कारण देश बंट चुका था। उसने दाऊद का पीछा करने के पागलपन में राष्ट्रीय हितों को नजरंदाज कर दिया था। सुरक्षा के लिए महायाजक को दाऊद के पास भाग जाने के लिए विवश किया और शाऊल ने याजकों को मार डाला था। इस सबसे बढ़कर, इस्राएल की

सेना पलिश्तियों से बुरी तरह से हारी थी, और शाऊल और उसके पुत्र मारे गए थे। पहला शमूएल 31:7 उस पराजय के परिणामों के बारे में बताता है:

> यह देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई की परली ओर वाले और यरदन के पार रहने वाले भी इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगरों को छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उन में रहने लगे।

किसी बाहरी देश द्वारा हमारे देश पर आक्रमण करके, हमारी सेनाओं को हरा कर, हमारे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अन्य चुने हुए नेताओं को मार कर, देश पर कज़्ज़ाकरने की बात की कल्पना करें। इस्राएल के साथ भी यही हुआ था, जब उसकी सेना को हरा कर शाऊल का वध कर दिया गया था। डज़्ल्यू. फिलिप कैलर ने इस्राएल की दुर्दशा को इन शज़्दों में व्यज़्त किया है:

> पूरा देश शत्रु पलिश्तियों की लोहे की एड़ी के नीचे बुरी तरह से परेशान और चिज़ पड़ा था। निर्दयी आक्रमणकारियों ने सब से सुन्दर नगरों पर कज़्ज़ा कर लिया था। शाऊल के कज़्ज़े वाले क्षेत्र पर उनका अधिकार तथा नियंत्रण हो गया था। सो इस्राएल अब युद्ध में मारा और कूटा हुआ देश था।[1]

इस्राएल कौम ही थी जिसने नेतृत्व के लिए पुकार की थी, और दाऊद गद्दी पर बैठा।

यह पाठ राजा के रूप में दाऊद की आरज़्भिक चुनौतियों के बारे में है। हम 1 इतिहास 11–14 को जोड़कर 2 शमूएल 2–6; 23 को देखेंगे। यह देखकर कि यिशै के पुत्र ने परमेश्वर की सहायता से चुनौतियों का सामना कैसे किया था, शायद हमें नेतृत्व की कुछ समझ आ जाए, जिसकी आज बड़ी आवश्यकता है।

बुद्धिमान अगुवे चरित्रवान लोग होते हैं (2 शमू. 2:1-7)

इस्राएल को नेतृत्व की आवश्यकता थी, परन्तु उन्हें ऐरा–गैरा नेता या अगुवा नहीं चाहिए था। कटी–फटी और लहू–लुहान कौम की अगुआई के लिए एक साहसी, संवेदनशील तथा परमेश्वर को मानने वाले व्यज़्ति की आवश्यकता थी। चरवाहे के खेत के एकांत में, महल की शानो–शौकत में, और जंगल की विपज़ि में 30 साल से परमेश्वर एक ऐसा आदमी तैयार कर रहा था।

परमेश्वर की आरे से अगुवे के लिए पहली शर्त यह है कि वह निष्ठावान व्यज़्ति हो। अगुआई अगुवे के काम से नहीं बल्कि उसमें अगुवाई के गुण के कारण होती है। 2 शमूएल की पहली आयतों में, हमने दाऊद के व्यवहार के बारे में कुछ जाना था: हमने उसे शाऊल की मृत्यु पर विलाप करते और उसके सज़्मान में एक शोक गीत लिखते देखा था। (2 शमूएल 1:1–27); दाऊद इतना बड़ा था कि उसने शाऊल के प्रति अपने मन में किसी प्रकार का वैर विरोध नहीं रखा था। हमने दाऊद को परमेश्वर से यह पूछते देखा था कि ज़्या

वह यहूदा के नगरों में वापस चला जाए (2:1-3); वह इतना बड़ा था कि अगुआई के लिए परमेश्वर की ओर देख सकता था।

2:1 में परमेश्वर ने दाऊद को हेब्रोन में जाने के लिए कहा। हेब्रोन यहूदा के सबसे प्रतिष्ठित नगरों में से एक था। यहीं पर इब्राहीम ने अपनी प्रिय पत्नी सारा के मरने पर उसे गाड़ने के लिए भूमि का टुकड़ा खरीदा था। यहोशू की सेना द्वारा देश पर कब्ज़ा करने के समय कालेब ने हेब्रोन पर अपनी मीरास होने का दावा किया था।

हेब्रोन में, अब 30 वर्ष का हो चुका दाऊद को पहली बार राजा के रूप में पहचान मिली। ''और यहूदी लोग गए, और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा[2] हो'' (2:4क)। ध्यान दें कि यहूदा के गोत्र के अगुओं ने ही दाऊद को राजा के रूप में मान्यता दी थी। अगले साढ़े सात वर्ष तक, दाऊद ने एक ही गोत्र अर्थात यहूदा के घराने पर राज किया।

दाऊद के सिंहासन पर बैठते ही उसके सामने उसके व्यवहार की चुनौती आ पड़ी। यहूदा के लोगों ने नया राजा बनाया, ''जिन्होंने शाऊल को मिट्टी दी वे गिलाद के याबेश नगर के लोग हैं'' (2:4ख)।

पलिश्तियों ने शाऊल और उसके पुत्रों की लाशें ढूंढ़ कर, उनके सिर काट दिए थे और उनकी लाशें बेत-शान की दीवार से बांध दी थीं। पलिश्ती इस्राराएल के क्षेत्र में आगे तक चले गए थे। नृशंसता की खबर बिन्यामीन के गोत्र तथा शाऊल से मज़बूत सम्बन्धों वाले एक अन्य जाति नगर गिलाद के याबेश में पहुंच गई थी।[3]

अपने प्राणों को जोखिम में डालकर याबेश-गिलाद के लोग अंधेरे की आड़ में बेत-शान में जाकर उनकी लाशें उतारकर उन्हें सम्मानपूर्वक गाड़ने के लिए याबेश-गिलाद में ले आए।[4]

इस सूचना पर दाऊद की क्या प्रतिक्रिया होनी थी? क्या उसे इस खबर को अनदेखा कर देना चाहिए था या इसका जवाब देना चाहिए था? यदि वह प्रतिक्रिया करता तो उसे कैसे जवाब देना चाहिए था? याद रखें कि याबेश-गिलाद के लोग शाऊल के साथियों में सबसे कट्टर थे। दाऊद का जवाब मित्रता का हाथ पीछे करना था। दाऊद जानता था कि इस्राराएल में चंगाई के लिए अतीत को भुलाना आवश्यक है; और वह जानता था कि परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में उसके लिए अगुवाई करना आवश्यक है। राजा के रूप में उसका पहला आधिकारिक कार्य दूतों का याबेश-गिलाद में उनकी बहादुरी तथा करुणा पूर्ण कार्य के लिए आभार व्यक्त करना था।

दाऊद के शासन में से गुज़रते हुए, हम उसके उदार मन के साथ-साथ ''अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने''[5] के उसके अन्य उदाहरणों को देखेंगे। हमें ऐसी ही निष्ठा वाले अगुओं की आवश्यकता है!

बुद्धिमान अगुवे एकता की चिंता करते हैं (2 शमू. 2:8-3:1, 6-13, 17-21)

एक अगुवे के मन में यह स्पष्ट होना जरूरी है कि क्या आवश्यक है। अपने लक्ष्य को

पाने के लिए उसे प्राथमिकताओं के आधार पर काम करना चाहिए। फिर उसे उन लक्ष्यों को पाने तक कार्य में लग जाना चाहिए।

याबेश-गिलाद के आदमियों को दाऊद द्वारा आशीष देने की बात से स्पष्ट समझ आ जाता है कि दाऊद ने देखा कि उसका पहला लक्ष्य पुराने घावों को भरना तथा लोगों को इकट्ठा करना था। इकट्ठा हुए बिना वे अपने साझे शत्रु पलिश्तीन का सामना नहीं कर सकते थे। इसके अलावा, जब तक वे बंटे हुए थे तब तक उनके और परमेश्वर के बीच भी बाधा थी (1 यूहन्ना 4:20)। इसके अलावा, एक हुए बिना वे न तो बढ़ सकते थे और न उन्नति कर सकते थे। दाऊद की एक महान कविता का आरंभ इस प्रकार होता है, ''देखो, यह ज़्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!'' (भजन संहिता 133:1)। दाऊद के एजेंडे में परमेश्वर के हर अगुवे की तरह, एकता को प्रमुख स्थान दिया गया था।[6]

इसका अर्थ यह नहीं था कि एकता का मार्ग समतल, छायादार और आसान था। हर कोई एकता नहीं चाहता। जब मैं जवान था तो मुझे लगता था कि बहुत से लोग *कहते* हैं कि एकता होनी चाहिए। परन्तु मैंने पाया कि बहुत से लोग हैं जो फूट चाहते हैं, और कुछ तो अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए फूट डालने के काम में व्यस्त रहते हैं।

एकता के लिए दाऊद की पहली बाधा अज़्नेर था। शाऊल की सेनाओं का सेनापति होने के कारण (1 शमूएल 17:55; 26:5), अज़्नेर इस्राएलियों की हार तथा बिखरने का प्रमुख कारण था। आरज़्भ में, उज़र में दाऊद को राजा बनाने की लोक-लहर चली थी (नोट 2 शमूएल 3:17); उस समय अज़्नेर आसानी से उज़री इस्राएल का समर्थन दाऊद को दिला सकता था। परन्तु दाऊद का समर्थन करने के बजाय, अज़्नेर ने अपना ही एजेंडा रखा था।

अज़्नेर को समझना कठिन है। कई प्रकार से वह सराहनीय व्यज़्ति है। एक सैनिक अगुवे के रूप में वह बहादुर, योग्य, तथा अपने स्वामी के प्रति बेहद वफ़ादार था। उसकी मृत्यु पर दाऊद ने उसे, ''... इस्राएल में ... एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य'' कहा (2 शमूएल 3:38)।[7] इसके अलावा, अज़्नेर को मालूम था कि राजा के रूप में परमेश्वर ने शाऊल को राजा होना ठुकरा कर अगला राजा होने के लिए दाऊद को ही चुना है।[8]

फिर अज़्नेर ने दाऊद का समर्थन ज़्यों नहीं किया? शायद शाऊल के प्रति उसकी भ्रमित वफादारी के कारण। शायद (जैसा कई लोगों का विचार हो सकता है) अज़्नेर स्वार्थी भावना से भर गया था। 3:6 में यह ध्यान दिलाया गया है कि ''जब शाऊल और दाऊद दोनों के घरानों के मध्य लड़ाई हो रही थी, तब अज़्नेर शाऊल के घराने की सहायता में बल बढ़ाता गया।'' अज़्नेर शाऊल का रिश्तेदार भी था[9]; इसलिए शायद उसे स्वयं सिंहासन पर बैठने की उज़्मीद थी।

अज़्नेर के जो भी कारण हों, यहूदा के शत्रुओं के साथ युद्ध भड़काने के कारण इस्राएल में वर्षों तक चले खूनी युद्ध का ज़िज़्मेदार वही था। 2:12-32 में हम इन में से एक युद्ध के बारे में पढ़ते हैं। अज़्नेर और उसके आदमियों ने यरूशलेम से कुछ मील उज़र की ओर गिबोन के सुंदर ताल पर योआब[10] और उसकी सेनाओं से मुकाबला किया। योआब अपने

दो भाइयों अबीशै[11] और असाहेल के साथ था; वे सभी दाऊद के भानजे थे।[12] सब लोगों के लड़ाई पर जाने के बजाय, अज़्नेर ने सुझाव दिया कि उसके बारह आदमी योआब के बारह आदमियों से एक-एक करके भिड़ें, जो दाऊद और गोलियत में हुए मुकाबले की तरह ही था। परन्तु पूरी तरह युद्ध भड़कने में देर नहीं लगी, जिसमें योआब और उसकी सेना को निर्णायक विजय मिली।[13]

अज़्नेर और उसकी सेना के भाग जाने पर, योआब के भाई असाहेल ने जो जबर्दस्त धावक था, हिरण की सी फुरती से अज़्नेर का पीछा किया। अनुभवी सिपाही अज़्नेर, उस जवान को मारना नहीं चाहता था इसलिए उसने उससे उसका पीछा न करने का आग्रह किया (2:22), परन्तु वह न माना। आखिर अज़्नेर ने अपने भाले की पिछाड़ी उसके पेट में ऐसी मारी कि असाहेल वहीं ढेर हो गया (2:23)।[14] इस दु:खद दृश्य से उसका पीछा कम हो गया, जिससे अज़्नेर को फिर से संगठित होने का अवसर मिल गया। जब योआब और अन्य लोगों ने अज़्नेर को घेर लिया, तो वह और उसके साथी घिर गए। अज़्नेर ने योआब को समझाया कि और खून न बहाया जाए, और दोनों पक्ष घर लौट गए।

यहूदा के गोत्र को उज़री गोत्रों के अधीन करने की अज़्नेर की नीति सफल नहीं हुई ज़्योंकि परमेश्वर दाऊद के साथ था। 3:1 में हम पढ़ते हैं, ''शाऊल के घराने और दाऊद के घराने के मध्य बहुत दिन तक लड़ाई होती रही; परन्तु दाऊद प्रबल हो गया, शाऊल का घराना निर्बल पड़ता गया।''

साढ़े पांच साल बाद अज़्नेर ने एक नई चाल चली: उसने उज़री गोत्रों पर शाऊल एक पुत्र को सिंहासन पर बैठा दिया।[15]

> परन्तु नेर का पुत्र अज़्नेर जो शाऊल का प्रधान सेनापति था, उसने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को संग ले पार जाकर महनैम में पहुंचाया;[16] और उसे ... समस्त इस्राएल के देश पर राजा नियुज़्त किया। शाऊल का पुत्र ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब वह इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। ... (2:8-10)।

यहां हम पहली बार पढ़ते हैं कि शाऊल का ईशबोशेत[17] (या एशबाल[18]) नामक कोई पुत्र था। वह स्पष्टत: युद्ध में मरने वाले शाऊल के तीन पुत्रों से छोटा था।[19] किसी प्रकार गिलबो पर्वत पर अपने पिता तथा तीन बड़े भाईयों की हत्या के समय वह बच गया था। ज़्योंकि ईशबोशेत एक निर्बल व्यज़्ति था (तु. 2 शमूएल 3:11; 4:1), सज़्भवत: इसीलिए वह युद्ध में नहीं गया था।

ईशबोशेत ने एक कठपुतली हाकिम के रूप में बारह वर्ष तक राज्य किया जबकि वास्तविक शज़्ति अज़्नेर के हाथ में थी। यह एक गतिरोध ही था जो सदा तक रह सकता था, जिस कारण दाऊद देश के लोगों में एकता नहीं ला पाया। परन्तु अचानक एक नाटकीय मोड़ आया। मनुष्य के मामलों में परमेश्वर का हाथ यहां फिर देखा जा सकता है। एक दिन ईशबोशेत ने अज़्नेर पर उसके पिता की एक रखैल के पास जाने का आरोप लगा दिया।[20]

राजा की किसी रखैल पर हक जताने का अर्थ पूरे ज़नान-खाने पर दावा करना था, जिसका अर्थ गद्दी पर दावा करना था। एक प्रकार से ईशबोशेत अज़्नेर पर राज-द्रोह का आरोप लगा रहा था। अज़्नेर क्रोधित हो गया:

> ''ज़्या मैं यहूदा का कुज़ा हूं कि इस प्रकार से लुढ़काया जाऊं?'' वह चिल्लाया। ''तुझे और तेरे पिता को दाऊद के हाथ न पड़ने का तुमने मुझे यह बदला दिया ...? परमेश्वर का शाप मुझ पर हो,यदि प्रभु की भविष्यवाणी के अनुसार मैं दान से बेर्शेबा तक तेरा सारा राज्य छीन कर दाऊद को न दे दूं'' (3:8-10; LB)।

ईशबोशेत को गद्दी पर बिठाना उज़री पलिश्तीन में आशाओं को फिर से जगाने और शाऊल के एक पुत्र के इर्द-गिर्द जमा करने का अज़्नेर का दुस्साहस हो सकता है। परन्तु ईशबोशेत उसके विरुद्ध ही हो गया, तो अज़्नेर को लगा कि उसकी दाल नहीं गलने वाली। चतुर अनुभवी योद्धा ने बुरी परिस्थिति का लाभ उठाने का फैसला किया। उसने दाऊद को अपना समर्थन देने की पेशकश करने के लिए उसके पास अपने दूत भेजे (2 शमूएल 3:12)।

ज़्या आप कल्पना कर सकते हैं कि इस प्रस्ताव पर दाऊद कितना हैरान हुआ होगा? हर शाम दाऊद परमेश्वर के सामने पुकारता होगा, ''हे परमेश्वर, ऐसा कब तक होता रहेगा, भाई को भाई कब तक मारता रहेगा?'' तभी, जब कोई किनारा नहीं दिख रहा था, तो उस अंतिम व्यज़्ति अर्थात अज़्नेर की ओर से जिससे दाऊद को अंतिम उज़्मीद थी, शांति का एक प्रस्ताव आया। ज़्या प्रभु के ढंग अद्‌भुत नहीं हैं? (नीतिवचन 16:7)।

दाऊद ने सावधानीपूर्वक गर्मजोशी से अज़्नेर का प्रस्ताव[21] स्वीकार कर लिया। अज़्नेर दाऊद की राजधानी हेब्रोन में आया। वर्षों की शत्रुता के बाद आमने-सामने होने पर अज़्नेर और दाऊद के चेहरों पर तनाव स्पष्ट पढ़ा जा सकता होगा। शांति के इच्छुक दाऊद ने अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया। वह अज़्नेर तथा उसके आदमियों को भोजन कक्ष में ले गया,जहां एक शानदार दावत तैयार की गई थी।[22] बुद्धिमान अगुवे जानते हैं कि सौदेबाजी के मेज़ के बजाय खाने की मेज़ पर अधिक मतभेद सुलझाए जा सकते हैं।

शांति सभा सफलतापूर्वक चली। अंततः, अज़्नेर ने दाऊद से कहा, ''मैं उठकर जाऊंगा, और अपने प्रभु राजा के पास सब इस्राएल को इकट्ठा करूंगा, कि वे तेरे साथ वाचा बांधें, और तू अपनी इच्छा के अनुसार राज्य कर सके'' (3:21क)। शीघ्र ही अज़्नेर उज़री गोत्रों को समझाने चला गया। ''दाऊद ने अज़्नेर को विदा किया, और वह कुशल से चला गया'' (3:21ख)। वर्षों के गृह युद्ध के बाद, एकता की उज़्मीद बंधी थी।

जब हमारे अपने देश में भयानक गृह युद्ध छिड़ा हुआ था, तो राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने यीशु की एक बात कही थी जिसमें देश के एक होने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया था: ''यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य ज़्योंकर स्थिर रह सकती है? और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर ज़्योंकर स्थिर रह सकेगा?'' (मरकुस 3:24, 25)। दाऊद की तरह, लिंकन जानते थे कि जिस देश में फूट पड़ जाए वह देश विनाश का बीज लिए हुए है। यही सिद्धांत जो कौम या देश के लिए है, समाज के लिए भी है ... और जैसे

समाज के लिए है वैसे ही मण्डलियों के लिए भी ... और जैसे मण्डलियों के लिए है वैसे ही परिवारों के लिए भी। परमेश्वर के अगुवे, चाहे राजनैतिक नेता हों, मण्डलियों के अगुवे या परिवार की अगुवाई करने वाले, उनकी प्राथमिकता में एकता का होना आवश्यक है।

बुद्धिमान अगुवे संकटों से निपट सकते हैं (2 शमू. 3:22-37)

यदि यह परी कथा होती, तो मैं कहता कि उज़री गोत्रों में कुछ सप्ताह घूमने के बाद, अज़्नेर उन्हें पूरे इस्राएल पर दाऊद को राजा बनाने के लिए हेब्रोन में ले आया। परन्तु जीवन कोई परी कथा नहीं है, और एकता का मार्ग किसी पुराने शत्रु को दावत पर बुलाने जितना आसान नहीं है। कई बार अप्रत्याशित मोड़ तथा गतिरोधक आ जाते हैं और कदम मोड़कर दूसरे मार्ग पर चलना पड़ता है। अगुवों को अप्रत्याशित बातों की उज़्मीद रखनी चाहिए; उन्हें तुरन्त निर्णय लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

2 शमूएल 3 की अगली कुछ आयतें बताती हैं कि अज़्नेर के दाऊद के पास जाने के समय योआब हेब्रोन में नहीं था; योआब और उसके आदमी किसी हमले के लिए बाहर गए हुए थे। (यह जानते हुए कि योआब की उपस्थिति से शांति प्रक्रिया बाधित हो सकती है, दाऊद द्वारा योआब को जानबूझकर भेजने की बात पर आश्चर्य होता है।) स्पष्टत:, योआब अज़्नेर के जाने के कुछ देर बाद ही आ गया। जब उसने सुना कि दाऊद ने अज़्नेर की राह में ''फूल बिछाए'' हैं, और उसे शांति से विदा किया है, तो योआब अपने आप पर काबू न रख पाया। उसने सिंहासन के कमरे में भाग कर राजा को बताया कि अज़्नेर की मंशा सही नहीं है, वह जासूसी करने आया है। योआब के कहने का अर्थ था कि दाऊद को उस अवसर का इस्तेमाल अज़्नेर को पकड़ने के लिए करना चाहिए था।

योआब दाऊद की पसली में कांटा ही था (2 शमूएल 18:5, 14; 1 राजा 2:5, 6)। वह महान योद्धा, निर्ज़य अगुवा था जिसने लोगों को प्रेरित किया था, और जो अपने राजा के लिए मरने को तैयार था। दूसरी ओर वह स्वार्थी, बदला लेने की इच्छा रखने वाला और अज़्सर आज्ञा न मानने वाला था, जिसमें कुछ आत्मिक गुण भी थे।[23] सब अगुवों के पास योआब अर्थात ऐसे लोग होते हैं जिनके बिना और जिनके साथ वे रह नहीं सकते। एक लीडर के रूप में आपकी सफलता प्राय: इसी बात पर आधारित होती है कि आप योआब जैसे लोगों के साथ कैसे निपटते हैं।

वहां पहुंचने के लिए,जहां से एकता को देखा जा सकता था,सात से अधिक वर्ष लग गए थे। योआब ने उस उन्नति को एक घंटे से भी कम समय में नष्ट कर दिया था। दाऊद के पास से जाकर योआब ने अज़्नेर के पीछे, जो मुश्किल से एक-दो मील ही गया होगा, यह कहने के लिए आदमी भेजे होंगे कि दाऊद उससे फिर मिलना चाहता है। बिना कोई संदेह किए, अज़्नेर तुरन्त वापस आ गया। योआब उससे ''एकांत में बातें करने के लिए'' (3:27) उसे एक ओर ले गया। जब अज़्नेर दाऊद के संदेश की प्रतीक्षा कर रहा था, तो योआब ने उसके पेट में अपना हथियार घुसा दिया, सो योआब के भाई की तरह ही अज़्नेर भी मर गया।[24]

''इस्राएल के प्रसिद्ध लोग, भाग 1'' के एक पाठ में, हमने सुझाव दिया था कि ''जब

मन बदला लेने को पुकारता है'' तो रुक कर ''हिसाब लगाना'' चाहिए। योआब ने बदला तो ले लिया, परन्तु इसकी कीमत हद से ज़्यादा थी। हालात दाऊद और अज़्नेर की मुलाकात से पहले से भी खराब हो गए। जब दाऊद ने सुना कि ज़्या हुआ है, तो उसे पता था कि यह अफवाह फैलते देर नहीं लगेगी कि अज़्नेर को मारने के लिए धोखे से हेब्रोन में बुलाया गया था। लोग कहेंगे कि दाऊद पर ज़रोसा न किया जाए। ऐसा लगा जैसे बदला लेने की[25] योआब की दुष्ट प्यास से उज़र और दक्षिण के फिर से मिलने की हर संभावना खत्म की दी।

वास्तविक लीडरशिप का पता ऐसे समय में ही चलता है। इस विपज़ि से निपटने के दाऊद के ढंग से पता चलता है कि परमेश्वर ने उसे उसके ईश्वरीय गुणों के कारण ही नहीं बल्कि खतरनाक परिस्थितियों में उसकी संवेदनशीलता के कारण भी चुना था। ध्यान दें कि इस त्रासदी को पलटने के लिए दाऊद ने ज़्या किया।

पहले तो, उसने तुरन्त कार्य किया। संकट के समय, समय बड़ा महत्वपूर्ण होता है। हम में से कई लोग इस उज़्मीद से कि सब ठीक हो जाएगा, टालते रहते हैं, परन्तु सब ठीक कभी नहीं होता। ऐसे समय में असली लीडर दृढ़ता से कार्य करते हैं।

दूसरा, दाऊद ने इस कृत्य में व्यज़्तिगत तौर पर शामिल होने की बात तुरन्त नकार दी (3:28)। इसका अपने आप में बहुत कम महत्व था, परन्तु यह आवश्यक था।

तीसरा, उसने योआब को उसके कृत्य के लिए सार्वजनिक तौर पर दोषी ठहराया, उसे सेना की पदवी से उतार दिया,[26] और योआब और घराने को श्राप दिया। हम हैरान हो सकते हैं कि योआब को कठोर दण्ड ज़्यों नहीं दिया गया। योआब को मारने का अर्थ दाऊद के अपने अधिकारियों में फूट डालना था।[27] निस्संदेह यहूदा के बहुत से लोगों को लगता था कि योआब ने सही किया। पुन:, उस ज़माने में श्राप देना ''कम दण्ड'' नहीं समझा जाता था। अंत में, दाऊद एक ऐसा सबक पढ़ रहा था जिसे सीखना बड़ा कठिन था कि कुछ बातें परमेश्वर के हाथ में छोड़ देनी चाहिए। उसने निष्कर्ष निकाला, ''यहोवा बुराई करने वाले को उसकी बुराई के अनुसार ही पलटा दे'' (3:39ख)।

चौथा, उसने राष्ट्रीय शोक का ऐलान कर दिया और अज़्नेर को हेब्रोन में पूरे राजकीय सज़्मान से दफ़ना दिया। दाऊद ने अर्थी (वह ढांचा, जिस पर अज़्नेर की लाश रखी थी) के पीछे-पीछे अपने अधिकारियों की अगुआई की। उन्होंने शाही या सैनिक लिबास नहीं पहना; दाऊद ने सबको शोक के वस्त्र पहनकर आने की आज्ञा दी थी।[28] (योआब के लिए भी शोक वस्त्र पहनकर अज़्नेर को सज़्मान देना आवश्यक था। उसने इसका विरोध कैसे किया होगा!) जनाज़े के समय, अपने साफ, टाट वाले लिबास में, दाऊद ने जैसे शाऊल के लिए गाया था वैसे ही अज़्नेर के लिए भी शोक गीत सुनाया। एक बार फिर, दाऊद के अनुग्रहकारी मन तथा शांति के लिए उसकी इच्छा लोगों को पता चला। वह चिल्लाया, ''इस्राएल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है'' (3:38)।

पांचवां, दाऊद ने सचमुच शोक जताया। न केवल वह रोया, बल्कि उसने जनाज़े पर खाने में भाग लेने से भी इनकार कर दिया। मैं ज़ोर देकर कहता हूं कि दाऊद ने किसी राजनयिक कार्य की तरह दिखावटी शोक नहीं किया। पलिश्तीन देश में दाऊद को समझ

आ गई थी कि आज नहीं तो कल (प्राय: शीघ्र ही) विश्वासघात का बदला मिल ही जाता है। आखिर पीछे चलने वाले लोग पाखण्डी को पहचान ही लेते हैं। दाऊद ने लोगों को प्रभावित कर लिया ज़्योंकि उसका शोक दिल से था: वह एक महान व्यज़्ति की आकस्मिक तथा अपमानजनक मृत्यु से दु:खी था।

दाऊद के निर्णायक तथा समझदार कार्य का ज़्या परिणाम हुआ? दाऊद ने अपने लोगों को प्रसन्न करके उन्हें विश्वास दिलाया कि ज़्नेर को मारने में उसका कोई हाथ नहीं था।

हर अगुवे या लीडर में दृढ़ता तथा बुद्धि का होना आवश्यक है। परमेश्वर का अगुवा जानता है कि ये दोनों बातें परमेश्वर की निकटता में पाई जा सकती हैं। यहोशू ने कहा था:

> इतना ही हो कि तू हियाव बांधकर और बहुत दृढ़ होकर ... व्यवस्था ... के अनुसार करने में चौकसी करना; और उस से न तो दहिने मुड़ना और न बाएं, तब जहां-जहां तू जाएगा वहां-वहां तेरा काम सुफल होगा। व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चिज़ से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन-रात ध्यान दिए रहना, ... हियाव बांधकर दृढ़ हो जा ...; ज़्योंकि जहां-जहां तू जाएगा वहां-वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा (यहोशू 1:7-9)।

पुराने नियम के सबसे बुद्धिमान व्यज़्ति ने कहा था कि बुद्धि पढ़ने से और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन बिताने से आती है (देखें नीतिवचन 1:1, 2; 2:2; आदि)। याकूब ने कहा है, ''यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे'' (याकूब 1:5)।

आइए, हम बाइबल अध्ययन तथा प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के साथ सज़्बन्ध तथा उसके उद्देश्य पर अपना ध्यान लगाएं। फिर, संकट आने पर हम दृढ़ता से काम कर सकेंगे।

बुद्धिमान अगुवे अपनी निर्बलताओं को छुपाते नहीं (2 शमू. 3:38, 39)

दाऊद ने एक और काम किया जो लोगों को पसन्द आया; उसने अपनी कमियों को माना। 3:38, 39 पर ध्यान दें: ''और राजा ने अपने कर्मचारियों से कहा, ... यद्यपि मैं अभिषिज़्त राजा हूं; और वे सरूयाह के पुत्र [अर्थात, योआब और उसके भाई] मुझसे अधिक प्रचंड हैं।'' यद्यपि दाऊद ने अज़्नेर की मृत्यु में अपना हाथ होने से इनकार किया, परन्तु वह जानता था कि अपने अधीन की ज़िज़्मेदारी उसी पर है। दाऊद मानो कह रहा था, ''यदि मैं उतना मज़बूत अगुवा होता जितना होना चाहिए था, तो योआब और उसके षड्यंत्रकारी साथी ऐसा करने का साहस न कर पाते।''

गलती हो जाने पर, बलि का बकरा ढूंढ़ने के लिए दूसरों पर आरोप न लगाने वाले बल्कि आरोप अपने सिर लेने वाले अगुवों की मैं सराहना करता हूं-चाहे वे जीत सकने वाला हारी हुई टीम का कोच हो, अधीन लोगों की गलत सूचना के कारण विनाश कार्य करने वाला राजनीतिक अगुवा हो, या समस्याओं से भरी मंडली के प्राचीन हों। एक नियम

के रूप में, लोग अपनी गलती की ज़िम्मेदारी न मानने वाले व्यक्ति की तुलना में अपनी गलतियों को मान लेने वाले को दूसरा अवसर देना अधिक पसन्द करते हैं।

अपनी कमियों को मान लेने पर दाऊद के प्रति उसके अनुयायियों का सम्मान कम नहीं हुआ; बल्कि, उनकी नज़र में उसका सम्मान और भी बढ़ा। दाऊद में वही आत्मा थी जिसके बारे में पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 12:9, 10 में लिखा है:

> [परमेश्वर] ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिए मैं बड़े आनंद से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि [प्रभु] की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं ... निर्बलताओं, ... में, प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तब बलवन्त होता हूं।

अपनी कमियों को न मानने वाला अगुवा आशंकित ही होगा। असली लीडर इतने बलवान होते हैं कि वे अपनी निर्बलताओं को मान लेते हैं, इतने आत्मविश्वास से भरे होते हैं कि अपनी कमियों को स्वीकार कर लेते हैं, और इतने महान होते हैं कि अपनी गलतियों को मान लेते हैं।

बुद्धिमान अगुवे बाधाओं के बावजूद आत्मविश्वासपूर्ण होते हैं (2 शमू. 4:1-5:5; 1 इति. 11:1-3; 12:23-40)

अज़्नेर की हत्या की त्रासदी के तुरन्त बाद दाऊद पर विपत्ति का बड़ा बादल छा गया। ईशबोशेत की सेना के दो सेनापति भाइयों ने अज़्नेर की मृत्यु की बात सुनकर दाऊद का समर्थन हासिल करने की योजना बनाने का फैसला किया।[29] वे दोपहर के समय ईशबोशेत के घर आए जब कुछ लोग भड़के हुए थे।[30] बिना किसी भय के राजा के शयन-कक्ष में जाकर उन्होंने उसे मार डाला। उसका सिर काट कर रातों-रात वे दाऊद के पास ले आए।

जब उन्होंने ईशबोशेत का सिर हाथ में लिए दाऊद के द्वार में प्रवेश किया, तो उन्हें पता चला कि पूरे इस्राएल पर राजा बनने वाले व्यक्ति को उन्होंने गलत समझा था। एक बार फिर तुरन्त कार्यवाही की आवश्यकता थी, वरना शीघ्र ही यह बात फैल जाती कि सज़ा-परिवर्तन में दाऊद की कोई चाल थी। दाऊद ने उन भाइयों को उस अमालेकी को दिए दण्ड की बात याद दिलाई, जिसने शाऊल को मारने का दावा किया था। उसने कहा, ''फिर जब दुष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य[31] को उसी के घर में, वरन उसकी चारपाई ही पर घात किया, तो मैं अब अवश्य ही उसके खून का पलटा तुम से लूंगा, और तुम्हें धरती पर से नष्ट कर डालूंगा'' (2 शमूएल 4:11)।

उसने दोनों को मार कर, उनके हाथ-पांव काट दिए और उनकी लाशें सार्वजनिक स्थान पर टांग दीं। दाऊद इससे दोहरा संदेश भेज रहा है: (1) नीतिवचन 6:16-19 का सामान्य संदेश:यहोवा ''निर्दोष लहू बहाने वाले हाथ'' और ''बुराई करने को वेग दौड़ने वाले पांव से घृणा करता है''; और (2) विशेष संदेश कि परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में, वह झूठ और धोखे को बढ़ावा नहीं देगा, और उल्लंघन करने वालों को कठोर दंड मिलेगा।

दाऊद ने ईशबोशेत का सिर अज़्नेर की कब्र में गाड़ दिया। यह शाऊल के राज घराने को अंतिम सलाम था।

बेसबॉल के प्रसिद्ध खिलाड़ी योगी बेरा को उद्धृत किया जाता है, ''जब तक खत्म नहीं होता तब तक पूरा नहीं होता,'' और हर लीडर जानता है कि यह सत्स है। विपज़ि को पिछले दरवाज़े से बाहर करके अपने आप को मुबारकबाद देने के लिए रुकते ही, एक और विपज़ि आपके सामने वाले दरवाज़े से दस्तक दे देगी। ''मर्फी का नियम'' कहता है कि ''जो गलत होना है वह गलत ही होगा।'' लीडरों के लिए मर्फी का एक विशेष नियम है: ''जो गलत होना है, वह गलत ही होगा–अपने से हज़ार गुणा।''

परन्तु वास्तविक अगुवे सकारात्मक ही रहते हैं। उन्हें अंत में सफलता का भरोसा रहता है। विशेष तौर पर यह बात परमेश्वर के अगुवों के लिए सत्य है, जो जानते हैं कि परमेश्वर उनकी ओर है (रोमियो 8:31)।

दाऊद का अभिषेक शमूएल द्वारा करने से अब तक बीस वर्षों में एक से एक बड़ी चुनौती आई थी। परन्तु दाऊद डरकर भागा नहीं था। ऐसी वफ़ादारी के लिए परमेश्वर ईनाम देता है। इस कारण अध्याय 5 के पहले भाग में हम पढ़ते हैं:

> तब इस्राएल के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे, सुन, हम लोग और तू एक ही हाड़ मांस हैं। फिर भूतकाल में जब शाऊल हमारा राजा था, तब भी इस्राएल का अगुवा तू ही था; और यहोवा ने तुझ से कहा, कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा, और इस्राएल का प्रधान तू ही होगा। सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन में राजा के पास आए; और दाऊद राजा ने उनके साथ हेब्रोन में यहोवा के साज़्हने वाचा बांधी, और उन्होंने इस्राएल का राजा होने के लिए दाऊद का अभिषेक किया[32] (आयतें 1–3)।

1 इतिहास का लेखक हमें बताता है कि जब बुजुर्ग आए, तो सिपाही भी सभी उज़री गोत्रों में से आए कि ''यहोवा के वचन के अनुसार शाऊल का राज्य उसके हाथ में कर दें'' (12:23)। ''ये सब ... दाऊद को सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिए ... सच्चे मन से आए थे'' (आयत 38)। वे सब लगभग 340,000 की सेना लेकर आए थे![33] वे अपने साथ तीस दिन तक चलने वाली शानदार दावत का सामान भी लाए थे। यह अवश्य ही बहुत बड़ी दावत होगी! ''इस्राएल में आनन्द मनाया जा रहा था'' (1 इतिहास 12:40)।

दाऊद जीवन के अपने कार्य को आरज़्भ करने को तैयार था, जिसकी वह सैंतीस वर्षों से तैयारी कर रहा था!

> दाऊद तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा। साढ़े सात वर्ष तक तो उसने हेब्रोन में यहूदा पर राज्य किया, और तैंतीस वर्ष तक यरूशलेम में समस्त इस्राएल और यहूदा पर राज्य किया (2 शमूएल 5:4, 5)।

बुद्धिमान अगुवे समझते हैं कि वे किसी पदवी पर नहीं बैठे बल्कि ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं (2 शमू. 5:6-10; 1 इति. 11:4-9)

पुन:, यदि यह कोई परी कथा होती, तो यह कहने का सही समय था, ''और वे खुशी-खुशी रहने लगे।'' परन्तु यह परी कथा नहीं है; यह तो वास्तविक जीवन है और वास्तविक जीवन इतना व्यवस्थित नहीं होता। जब दाऊद को सभी बारह गोत्रों द्वारा राजा बनाया गया था, तो उसका काम केवल आरम्भ ही हुआ था। कहते हैं कि लक्ष्य की प्राप्ति, वास्तव में नई समस्याएं लेकर आती है।

दाऊद का पहला काम हासिल की गई एकता को स्थिर करना था। नई-नई एकता नवजात बालक की तरह ही कोमल होती है, जिसे हर व्याधि का खतरा रहता है, किसी ज़ी समय मृत्यु हो सकती है। दाऊद ने एक साहसिक तथा चतुरतापूर्ण युक्ति पर निर्णय लिया, जो उसकी कल्पना से कहीं परे थी। उसने यरूशलेम पर कब्ज़ाकरके इसे अपना शाही नगर, देश की राजधानी और इस्राएल के लिए आत्मिक केन्द्र बनाना था।

प्राचीन नगर यरूशलेम देश में सबसे ऊंची जगह पर बनाया गया था। इब्राहीम के समय में भी यह एक शाही नगर था, जिसका राजा मलिकिसिदक था।[34] यरूशलेम के निकट मोरिय्याह पर्वत था, जहां इब्राहीम अपने बेटे इसहाक को बलिदान करने के लिए ले गया था। यहोशू ने देश में आगे बढ़ने के समय यरूशलेम के राजा को मारा था (तु.यहोशू 10:22-27), परन्तु वह नगर को हरा नहीं पाया था (यहोशू 15:63)। और भी लोगों ने नगर पर कब्ज़ाकरने की कोशिश की थी, परन्तु वे सफल नहीं हुए थे (न्यायियों 1:21)। तीन ओर से गहरी खाइयों से घिरा चोटी पर बसा यरूशलेम चार सौ वर्ष तक इस्राएल के केन्द्र में एक अभेद्य किले की तरह रहा। यरूशलेम पर कब्ज़ा करके, दाऊद ने एकता की सामर्थ दिखानी थी; मिलकर काम करते हुए इस्राएल ने ऐसा कुछ पाना था जो अकेले कोई नहीं कर पाया था। इसके अलावा, यहूदा तथा बिन्यामीन के गोत्रों के बीच यरूशलेम एक तटस्थ आधार था, इसलिए दाऊद ने यह संकेत देना था कि वह अपने शासन में कोई पक्षपात नहीं दिखाएगा।

यरूशलेम पर कब्ज़े की बात करना तो आसान था, परन्तु वास्तव में उस पर कब्ज़ाकरना आसान नहीं था। जब दाऊद अपनी सेना लेकर नगर की ओर बढ़ा, तो यबूसियों[35] ने जिनका गढ़ पर कब्ज़ा था, उनका अपमान किया। ''जब तक तू अंधों और लगड़ों को दूर न करे, तब तक यहां पैठने न पाएगा!'' (देखें 2 शमूएल 5:6)। परन्तु कुछ लोगों का कहना है कि दाऊद शहर की सुरक्षा की कमज़ोरी को जानता था। चार दीवारी के बाहर स्थित एक चश्मे से पानी की एक सुरंग नगर के केन्द्र में स्थित एक कुएं तक जाती थी। उस सुरंग के रास्ते गहरे कुएं तक जाना एक आत्मघाती मिशन हो सकता था, इसलिए दाऊद ने यह पेशकश की कि ''जो यबूसियों को सबसे पहले मारेगा, वह (मेरी सेना का) मुख्य सेनापति होगा'' (देखें 1 इतिहास 11:6)। बिना कुछ सोचे योआब ठंडे पानी में अपने आदमियों को लेकर सुरंग के मुंह के अंधेर में कूद पड़ा। कुछ ही देर बाद दाऊद की सेना ने यरूशलेम पर कब्ज़ाकर लिया और दाऊद का सबसे निर्भय योद्धा और सबसे बड़ी परेशानी, फिर से दाऊद का प्रमुख सेनापति बन गया।

(योआब जैसे लोगों से पीछा छुड़ाना बड़ा कठिन होता है!)

दाऊद ने तुरन्त यरूशलेम को अपना मुज़्यालय बना लिया और इसकी सीमाओं का विस्तार करने लगा।[36] शीघ्र ही इसे ''दाऊद का नगर'' कहा जाने लगा। समय बीतने के साथ ''दाऊद की बड़ाई अधिक होती गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा उसके संग रहता था'' (2 शमूएल 5:10)।

2 शमूएल 5:11 की एक टिप्पणी से दाऊद की सफलता का पता चलता है: ''और सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूत और देवदारू की लकड़ी, और बढ़ई, और राजमिस्त्री भेजे, और उन्होंने दाऊद के लिए एक भवन [अर्थात, महल] बनाया।'' सोर एक महत्वपूर्ण बंदरगाह थी, जो इस्राएल के उज़र में फीनीके में थी। हीराम का उपहार महत्वपूर्ण है,ज़्योंकि दाऊद की नई पदवी को मान्यता देने वाली पहली बाहरी शज़्ति वही था।

हीराम की उदारता से दाऊद खुश हुआ। ''और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्थिर किया, और अपनी इस्राएली प्रजा के निमिज़ मेरा राज्य बढ़ाया है'' (2 शमूएल 5:12)। ज़्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आपको कोई विशेष चीज मिली हो और आप चकित हो रहे हों, ''कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा? ज़्या आंखें खुलने पर मैं ऐसा ही देखूंगा?'' स्पष्टतया, दाऊद के साथ ऐसा ही कुछ हुआ। हीराम के कार्य से इस बात की पुष्टि हो गई कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पूरी होने को हैं।

हीराम की शुभकामनाएं दाऊद का ध्यान एक महत्वपूर्ण सच्चाई पर भी लाएंगी। ''और दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा ने ... अपनी इस्राएली प्रजा के निमित मेरा राज्य बढ़ाया है।'' अपने मन में इसे रेखांकित कर लें: दाऊद के निमिज़ नहीं, बल्कि ''अपनी इस्राएली प्रजा के निमिज़।'' बहुत से लोगों को लगता है कि लीडरशिप का उद्देश्य उनकी इच्छा को, उनकी अभिलाषाओं को पूरा करने, उनकी मर्जी चलाने के लिए होता है। दाऊद का अपना एजेंडा नहीं था बल्कि ईश्वरीय एजेंडा था। उसने जो कुछ भी किया वह परमेश्वर के लोगों के लिए था।

लीडरशिप पदवी न होकर एक ज़िज़्मेदारी है। दाऊद की ज़िज़्मेदारी को समझ पाना कठिन है। दाऊद ने लोगों की केवल राजनीतिक तथा आर्थिक भलाई की चिंता ही नहीं करनी थी, बल्कि लोगों की आत्मिक भलाई के प्रति भी चिंतित होना था। राष्ट्रपति की बड़ी-बड़ी ज़िज़्मेदारियों पर ध्यान दें। प्रभु की कलीसिया के एल्डर की बहुत सी ज़िज़्मेदारियों पर विचार करें (इब्रानियों 13:17)। फिर कई लाख सदस्यों वाली मंडली एल्डर की ज़िज़्मेदारियों के साथ राष्ट्रपति के काम की कल्पना करें! इससे आपको दाऊद के सामने आने वाली चुनौतियों की कुछ समझ आ जाएगी।

हर अगुवे के लिए यह अहसास करना आवश्यक है कि लीडरशिप या अगुआई करने का अधिकार उन्हें अपने आनंद के लिए नहीं, बल्कि लोगों की सेवा के लिए दिया गया है। इससे भी महत्वपूर्ण, हर अगुवे को यह अहसास होना आवश्यक है कि उनकी जिज़्मेदारी उन लोगों की *नैतिक तथा आत्मिक* भलाई है जिनकी वह सेवा करता है। दुख की बात है कि बहुत से लोग यह अहसास नहीं करते।

बुद्धिमान अगुवे अपने अनुयायियों की सुरक्षा की चिन्ता करते हैं (2 शमू. 5:17-25; 1 इति. 14:8-16)

उज़री गोत्रों के बुजुर्गों के साथ पहली एक सभा में अज़्नेर ने कहा था, ''यहोवा ने दाऊद के विषय में यह कहा है, कि अपने दास दाऊद के द्वारा वह अपनी प्रजा इस्राएल को पलिश्तियों, वरन उनके सब शत्रुओं के हाथ से छुड़ाऊंगा'' (2 शमूएल 3:18)।[37] नए बने राजा की इस प्रतिज्ञा के सज़्बन्ध में शीघ्र ही परख हो गई। ''जब पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएल का राजा होने के लिए दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले'' (2 शमूएल 5:17)। जब तक देश बंटा हुआ था और दाऊद केवल यहूदा पर राजा था, तब तक पलिश्तियों को उससे कोई भय नहीं था। परन्तु जब दाऊद के अधीन इस्राएल एक हो गया, और उसके अधीन 300,000 की सेना हो गई, तो पलिश्ती उसे अपनी सुरक्षा संगठित करने से पहले ही नाश करने के लिए तैयार हुए।

यह छापा मारने वाले दल की तरह कोई छापामारी नहीं थी, बलिक एक युद्ध था, वैसा ही युद्ध, जिसमें शाऊल मारा गया था। यह जोर देकर कहा गया है कि ''*सब* पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले।'' NIV अनुवाद में है, ''वे उसे ढूंढ़ने के लिए पूरी सामर्थ्य से गए।'' वे पलिश्तीन से चलकर, आगे बढ़ते हुए तब तक लूटते और हत्या करते रहे,[38] जब तक यरूशलेम से कुछ दूर रपाईम की तराई में नहीं पहुंच गए।

जब दाऊद ने शत्रु को नीचे तराई में फैले देखा, तो वह इस्राएल के वास्तविक हाकिम के पास गया। उसने परमेश्वर से पूछा, ''ज़्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं?'' परमेश्वर ने उज़र दिया, ''चढ़ाई कर; ज़्योंकि मैं निश्चय पलिश्तियों को तेरे हाथ कर दूंगा'' (2 शमूएल 5:19)। वर्षों बाद पहली बार परमेश्वर की सेना के रूप में, दाऊद युद्ध में कूद पड़ा और उसने पलिश्तियों का हरा दिया। वह आनन्दित हुआ, ''यहोवा मेरे साज़्हने होकर मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाईं टूट पड़ा है'' (2 शमूएल 5:20)। उसने उस जगह का नाम बाल-पराज़ीम रखा, जिसका अर्थ है ''रास्ता बनाने वाला प्रभु।''

किसी भी अगुवे की सबसे बड़ी ज़िज़्मेदारी उन लोगों की रक्षा तथा बचाव करना है जो अगुआई के लिए उसकी ओर देखते हैं। कई बार विनाशकारी आक्रमणों का साफ पता चल जाता है; जबकि कई बार स्पष्ट पता नहीं चलता। कई बार वे आक्रमण ज़ीतर से होते हैं; अधिकतर भीतर से ही होते हैं (प्रेरितों 20:28-30 पर ध्यान दें)। बुद्धिमान अगुआ खतरे के प्रति और उससे बुद्धिमज़ापूर्वक निपटने की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील होता है। बुद्धिमान अगुआ, दाऊद की तरह, कठिन परिस्थितियों में सहायता तथा अगुआई के लिए परमेश्वर के पास जाता रहता है।

बुद्धिमान अगुवे यह भी जानते हैं कि समस्याएं सदा के लिए नहीं मिट जातीं कि जाकर आएं ही न। कुछ देर बाद ही पलिश्ती फिर आ गए थे। दाऊद की पहली विजय से घबराकर, वे रपाईम की तराई में पहले से अधिक सेना लेकर आए थे।[39] दाऊद फिर परमेश्वर के पास गया। इस बार परमेश्वर ने उसे शत्रु के पीछे से घेरा डालने और परमेश्वर के इशारे का इन्तजार करने को कहा। ''और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने

की सी आहट [अर्थात, परमेश्वर की सेना के युद्ध में जाने की आवाज] तुझे सुनाई पड़े,[40] तब यह जानकर फुर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा है'' (2 शमूएल 5:24)। एक बार फिर दाऊद ने परमेश्वर के आदेश का पालन किया। इस बार दाऊद और उसकी सेना ने शत्रु को उनके ही क्षेत्र में पहुंचा दिया। ''और इस्राएलियों ने पलिश्तियों की सेना को गिबोन से लेकर गेजेर तक मार लिया'' (1 इतिहास 14:16)। इस निर्णायक विजय से पलिश्तियों के हौसले पस्त हो गए। बेशक समय-समय पर पलिश्ती परेशानी देते रहे, परन्तु इससे इस्राएल के लिए उनके गंभीर खतरा होने की बात खत्म हो गई।

इन दो लड़ाइयों का संक्षिप्त वृत्तांत (केवल नौ आयतें), दाऊद के जीवन की अन्य सैकड़ों लड़ाइयों की तरह, केवल दो और युद्धों के बारे में बताता प्रतीत होता है। परन्तु इस्राएलियों के लिए, ये विजयें इस बात का प्रतीक थीं कि परमेश्वर ने अब दाऊद को उनका राजा मान लिया है, और परमेश्वर उसके राज्य को आशीष देगा। यह इतिहास निर्माण का समय था। सैकड़ों वर्षों बाद, यशायाह ने दुष्टों को दंड देने की परमेश्वर की बात कहते हुए लिखा:

> ज्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा होगा जैसा वह पराज़ीम नाम पर्वत
> [अर्थात्, बाल-पराज़ीम] पर खड़ा हुआ
> और जैसा गिबोन की तराई में उसने क्रोध दिखाया था;
> वह अब फिर क्रोध दिखाएगा, जिससे वह अपना काम करे,
> जो अचम्भित काम है, और वह कार्य करे जो अनोखा है
> (यशायाह 28:21)।

1 इतिहास 14:17 इन विजयों का परिणाम बताता है, ''तब दाऊद की कीर्ति सब देशों में फैल गई, और यहोवा ने सब जातियों के मन में उसका भय भर दिया।''

बुद्धिमान अगुवे जानते हैं कि हर समस्या को गम्भीरता से लेना आवश्यक है। हमें पता नहीं होता कि जिन चुनौतियों का हम सामना करते हैं, उनके परिणाम कितने दूरगामी और गम्भीर होंगे।

बुद्धिमान अगुवे प्रशंसा करने में उदार होते हैं (2 शमू. 23:8-39; 1 इति. 11:10-12:38)

दाऊद पलिश्तियों से अकेला नहीं भिड़ा था। उसने युद्ध में विजय केवल इसलिए नहीं हैं पाई थी कि परमेश्वर उसी के साथ था, बल्कि परमेश्वर ने सबसे सक्षम योद्धाओं में से कुछ भी उसके साथ रखे थे। दाऊद ने इस बात को समझा और जहां जिसे श्रेय देना चाहिए था, उसे दिया। दाऊद ने 2 शमूएल में इनमें से बहुत से लोगों का (''दाऊद के शूरवीरों'' [2 शमूएल 23:8; 1 इतिहास 11:10] के रूप में) अपने शासन की योजना बनाते उल्लेख किया है। 1 इतिहास में उनका नाम 11 व 12 अध्यायों में दाऊद के शासन

के प्रारंभ में मिलता है। दूसरा शमूएल में सैंतीस लोगों की सूची है। इस पर विचार करें: यह सूचियां कैसे बन गईं ? *राजा दाऊद* ने उन्हें लिखा हुआ था। उसने सूची में बड़े योद्धाओं के नाम शामिल किए थे। उसने उनके काम की सराहना की, और वह भावी पीढ़ियों को उनके और उनकी प्राप्तियों के बारे में बताना चाहता था।

बुद्धिमान अगुवे, कलीसिया में हों, घर में, या स्थानीय पंचायत या ज़्लब में हों, जानते हैं कि किसी को दिए जाने वाले महत्व का ज़्या महत्व है। मैं खुशामद या चापलूसी की बात नहीं कह रहा; मेरा कहने का भाव किसी के कार्य की वास्तव में सराहना करना है। पौलुस ने कहा, ''हर एक का हक चुकाया करो, ... जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो'' (रोमियों 13:7)। बुद्धिमान अगुवे प्रशंसा तथा सराहना करने में उदार होते हैं। बुद्धिमान अगुवे सबसे पहले परमेश्वर को श्रेय देते हैं, फिर उनको जिन्होंने कठिन परिश्रम किया होता है। वे ''परस्पर आदर करने'' को जानते हैं (रोमियों 12:10)।

बुद्धिमान अगुवे परिवार के महत्व को कम नहीं करते (2 शमू. 3:2-5, 12-16; 5:13-16; 1 इति. 14:3-7)

हमें इस पाठ के लिए प्रयुज़्त दाऊद के परिवार के हवालों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। 2 शमूएल 2:2 में हमें बताया गया है कि दाऊद का परिवार उसके साथ रहने के लिए हेब्रोन में आया। 2 शमूएल 3:1-5 में, यह बताने के बाद कि ''दाऊद प्रबल होता गया,'' प्रमाण दिया गया है कि ''हेब्रोन में दाऊद के पुत्र उत्पन्न हुए।''[41] दाऊद द्वारा यरूशलेम को राजधानी बना लेने के बाद, हमें उसके परिवार के बढ़ने के बारे में बताया गया है: ''और उसके और बेटे-बेटियां उत्पन्न हुईं'' (तु. 2 शमूएल 5:13; 1 इतिहास 14:3 भी देखें)।[42] स्पष्टतया, परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक ने समझा कि दाऊद का परिवार महत्वपूर्ण है।

परिवार अगुवों को बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी। जैसा कि हम आगे देखेंगे, बाद में दाऊद पर राजा होने की ज़िज़्मेदारियां इतनी बढ़ गईं कि उसने अपने परिवार को नज़रअंदाज़ कर दिया (नोट 1 राजा 1:6), और उसे इसकी कीमत भी चुकानी पड़ी। जब बुद्धिमान अगुवे प्राथमिकताओं पर काम करते हैं, तो वे अपने परिवारों की उपेक्षा नहीं करते।[43]

बुद्धिमान अगुवे अपने अनुयायियों को शामिल करते हैं (2 शमू. 6:1, 2; 1 इति. 13:1-4)

हमारा अगला अध्ययन यरूशलेम में सन्दूक को लाने के दाऊद के प्रयासों से आरंभ होगा। लीडरशिप के दो और तथ्य उस घटना में देखे जा सकते हैं। इतिहास की पुस्तक के लेखक ने बताया कि दाऊद ने किस प्रकार बुद्धिमज़ापूर्वक इस बात को लोगों में बताया:

और दाऊद ने सहस्त्रपतियों, शतपतियों और सब प्रधानों से सज़्मति ली। तब

दाऊद ने इस्राएल की सारी मण्डली से कहा, यदि यह तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर की इच्छा हो, तो इस्राएल के सब देशों में जो हमारे भाई रह गए हैं और उनके साथ जो याजक और लेवीय अपने अपने चराई वाले नगरों में रहते हैं, उनके पास भी यह कहला भेजें कि हमारे पास इकट्ठे हो जाओ। और हम अपने परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहां ले आएं; ज़्योंकि शाऊल के दिनों में हम उसके समीप नहीं जाते थे। और समस्त मण्डली ने कहा, हम ऐसा ही करेंगे, ज़्योंकि यह बात उन सब लोगों की दृष्टि में उचित मालूम हुई (1 इतिहास 13:1-4)।

''कहा'' और ''*यदि* यह तुमको अच्छा लगे'' शज़्दों पर विचार करें; फिर उनके जवाब पर ध्यान दें: ''समस्त मण्डली ने कहा, हम ऐसा ही करेंगे, ज़्योंकि यह बात उन सब लोगों की दृष्टि में उचित मालूम हुई।'' राजा के रूप में, दाऊद को अपने मन के अनुसार करने की छूट थी। परन्तु दाऊद की नज़र में सन्दूक को यरूशलेम में लाना इतना महत्वपूर्ण था कि उसने अपनी इच्छा को लोगों पर थोपना नहीं चाहा। उसने इस बारे में उनका विचार पूछा। उसने इसे ''राजा की योजना'' के बजाय इस्राएल की योजना बनाया। बुद्धिमान लोगों के लिए आवश्यक है कि वे लोगों की सुनें और उन्हें समझें।

बुद्धिमान अगुवे आत्मिक मामलों को प्राथमिकता देते हैं

1 इतिहास 13:1-4 में, सन्दूक को यरूशलेम में लाने को दिए गए महत्व पर ध्यान दें। दाऊद ने अब तक जो कुछ भी किया था, वह लक्ष्य को पाने के लिए केवल एक साधन था और वह लक्ष्य इस्राएल के लोगों को यहोवा के साथ निकट सज़्बन्ध में लाना था। इतिहास के लेखक के अनुसार, यरूशलेम को अपनी राजधानी[44] बनाने के बाद दाऊद का पहला काम सन्दूक को यरूशलेम में वापस लाने की योजना बनाना था। बुद्धिमान अगुवे आत्मिक बातों को प्राथमिकता देते हैं।

सारांश

मुझे उज़्मीद है कि यहूदा के गोत्र द्वारा राजा बनाने के बाद उसकी शुरुआत से आप प्रभावित हुए हैं। इन आयतों को बार-बार पढ़ते समय मेरी प्रार्थना थी कि ''हे परमेश्वर, जब भी तू मुझे अगुवा बनाए, तो मुझे वह बुद्धि देना जो अपने शासन के प्रारंभिक दिनों में दाऊद ने दिखाई थी।''

परन्तु, ज़्योंकि हम में से अधिकतर पीछे चलने वाले ही होते हैं, इसलिए मैं यह जोर देना चाहूंगा कि अच्छी लीडरशिप की तरह ही अच्छी फ़ालोशिप अर्थात पीछे चलने वाले होने का भी उतना ही महत्व है। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें ऐसे अगुवे दे, जो उसे महिमा देने वाले हों, और हमें उन अगुओं के लिए जो पहले से हैं[45], प्रार्थना करनी चाहिए। फिर हमें वैसे अनुयायी बनने का निश्चय करना चाहिए, जिनके द्वारा हमारे अगुवे अच्छा परिणाम दे सकें।[46]

''हे परमेश्वर, हमें बुद्धिमान अगुवे दे-और हमें वफ़ादार अनुयायी बना!''

प्रवचन नोट्स

बाइबल की कहानी के पाठों को दो तरह से लिया जा सकता है: कहानी में से प्रासंगिकता बना कर, या कहानी बता कर उस की प्रासंगिकता बना कर। इस शृंखला में अधिकतर पाठों में पहले वाला ढंग अपनाया गया है। ''नीचे चोट किए बिना ऊपर कैसे पहुंचे'' पाठ में इसका ढंग है। दोनों पाठों की सामग्री का किसी भी ढंग के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि एक ढंग ठीक नहीं लगता तो दूसरे ढंग का इस्तेमाल करें।

लीडरशिप पर हर पाठ में, पीछे चलने वाले होना आवश्यक है। बाइबल के इन हवालों से अच्छे अनुयायी होने के गुणों पर कई प्वांयट बनाए जा सकते हैं।

योआब और अज़्नेर दोनों शानदार व्यज़्ति हैं। दोनों पर या दोनों में से एक पर उपयोगी पात्र अध्ययन किये जा सकते हैं। दोनों की तुलना एक ही पाठ में करना दिलचस्प होगा।

ज़जन संहिता 30 दाऊद को समर्पित तथा ''भवन [जो उसके महल को कहा जा सकता है] की प्रतिष्ठा के समय का गीत''; इस पाठ में महल के बनाने का उल्लेख आया है। कुछ लोगों का मानना है कि दाऊद ने भजन 27 राजा के रूप में अपने प्रारज़्भिक दिनों में लिखा था। भजन के शज़्द इस समय के साथ मेल खाते हैं। बच्चों की आशीष पर भ.सं. 127 की तरह भाइचारे की एकता पर भजन, भ.सं. 133 को, इस पाठ से जोड़ना स्वाभाविक होगा।

टिप्पणियां

[1]डज़्ल्यू. फिलिप केलर, *डेविड, द शैफर्ड किंग* (वैको, टैज़्ससः वर्ड, 1986), 15. [2]यह दूसरी बार दाऊद का अभिषेक था। [3]जब बिन्यामीन के गोत्र में केवल छह सौ पुरुष रह गए, तो उनमें से चार सौ ने याबेश के गिलाद की कुंवारियों में से अपने लिए पत्नियां ले लीं (न्यायियों 21:8-14)। इसके अलावा, अपने शासन के प्रारंभिक दिनों में, शाऊल ने अज़्मोनियों द्वारा उन्हें गुलाम बनाने और उनकी आंखें निकालने की धमकी के समय याबेश-गिलाद के लोगों को छोड़ दिया था (1 शमूएल 11:1-11)। [4]गाड़ने से पूर्व, उनकी लाशें जला दी गई थीं (1 शमूएल 31:12)। लाशें पूरी तरह से जली नहीं थीं; बाद में दाऊद उनकी हड्डियां ले गया था (2 शमूएल 21:12-14)। ऐसा उन्होंने सफाई को ध्यान में रखते हुए किया या स्थानीय परज़्परा के अनुसार, परन्तु यहूदियों की ऐसी कोई रीति नहीं थी। [5]योनातन से की गई दाऊद की प्रतिज्ञा मपीबोशेत से किए गए व्यवहार में पूरी होने पर ध्यान दें। [6]भ.सं. 133:1 पर ध्यान करें। एकता आवश्यक है, परन्तु इतनी भी नहीं कि शुद्धता तथा वफ़ादारी को छोड़ दिया जाए (याकूब 3:17क; 10:34), फिर भी एकता को इन लक्ष्यों से अलग नहीं किया जा सकता। [7]दाऊद ने अज़्नेर की प्रशंसा अपने सेनापति योआब से भी अधिक की (1 राजा 2:32)। [8]2 शमूएल 3:9, 10, 18 पर ध्यान दें। शाऊल को दो बार छोड़ देने और शाऊल द्वारा दाऊद को अगला राजा मानने के समय अज़्नेर वहीं था (1 शमूएल 24; 26)। [9]अज़्नेर शाऊल का चाचा या चचेरा भाई था (1 शमूएल 14:50, 51)। [10]दाऊद की सेना के अगुवे के रूप में योआब का पहली बार उल्लेख 2 शमूएल 2:13 में आता है।

[11]शाऊल की छावनी में जाने के समय अबीशै दाऊद के साथ था; वह शाऊल को मार डालना चाहता था। [12]वे दाऊद की बहन सरूयाह के पुत्र थे। [13]योआब के 20 और अज़्नेर के 360 आदमी मारे गए थे (2 शमूएल 2:31)। [14]NEB में देखें: ''अज़्नेर ने भाले की *पिछाड़ी से* उसके पेट में मारा'' (2 शमूएल 2:23)। हो सकता है कि अज़्नेर ने अचानक अपने भाले का बट भूमि में गाड़ा हो और तेज़ी से आने के कारण

असाहेल भाले पर गिर गया हो, जिससे भाला उसके आर-पार हो गया। [15]2 शमूएल की कुछ सामग्री कालक्रम के बजाय विषय के अनुसार ली गई है, जिस कारण यह पता चल पाना असम्भव है कि कौन सी घटना पहले घटी। ज्योंकि ईशबोशेत दाऊद के पूरे इस्राएल पर राजा बनने से ठीक पहले दो वर्ष राज करके मर गया था, इसलिए दाऊद के केवल यहूदा पर राजा होने के अन्तिम दो वर्षों के दौरान ही वह राजा था। [16]गिलादी नगर हेब्रोन से लगभग 50 मील, यरदन के पार था। [17]ईशबोशेत का अक्षरश: अर्थ ''लज्जा का पुत्र'' है। यह उसे दिया गया अपमानजनक उपनाम हो सकता है, या शायद मूर्तिपूजकों के देवता के प्रति अपनी घृणा के कारण, बाद में लेखकों ने ''बाल'' का नाम ''लज्जा'' रख दिया। [18]1 इतिहास 8:33. ''एशबाल'' का अर्थ है ''बाल का पुत्र,'' जिसका अर्थ ''प्रभु का जन'' हो सकता है। ''प्रभु'' संभवतया यहोवा को कहा गया होगा। [19]ईशबोशेत का अंतिम उल्लेख 1 इतिहास 8:33 में मिलता है। शाऊल के दो अन्य पुत्रों के नाम 2 शमूएल 21:8 में मिलते हैं। मैं यह मान कर चलता हूं कि वे बहुत छोटे थे। [20]इब्रानी शास्त्र में यह नहीं बताया गया कि अब्नेर दोषी था या नहीं। कुछ अनुवादों में सप्तति अनुवाद का अनुसरण करते हुए आयत 7 के अंत में जोड़ा है, ''और अब्नेर ने उसे ले लिया।''

[21]दाऊद की शर्त थी, जो बड़ी अजीब थी, कि उसकी पत्नी मीकल उसे लौटाई जाए। अतिरिक्त लेख ''दाऊद की बिनती और मीकल'' देखें। [22]शायद दाऊद के पुत्र सुलैमान के मन नीतिवचन 25:21 समय यही अवसर होगा । [23]एक प्रसिद्ध अपवाद 2 शमूएल 10:12 है। [24]अब्नेर की हत्या में अबीशै का भी हाथ था (2 शमूएल 3:30)। [25]यह सम्भव है कि अब्नेर की हत्या के पीछे अबीशै के कई उद्देश्य थे। परन्तु, 2 शमूएल 30:27, 30 के अनुसार योआब का प्रमुख उद्देश्य बदला लेना ही था। [26]इसका अर्थ इस बात से लगाया जाता है कि जब दाऊद यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के लिए गया तो सेनापति की कुर्सी खाली थी (1 इतिहास 11:6)। [27]यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अंतत: योआब मारा गया *था* /उसका एक अपराध अब्नेर की हत्या करना था (1 राजा 2:28-34)। [28]टाट शोक या पश्चाताप जताने के लिए बोरी से बने वस्त्र को कहा जाता था। [29]उनका कार्य बदला लेने के लिए किया गया हो सकता है। बाद में एक जगह हमें बताया गया है कि शाऊल ने गिबोनियों को मारने की कोशिश की थी (2 शमूएल 21:2)। ये भाई बिन्यामीनी गोत्र को मिले एक गिबोनी नगर बेरोत से थे (यहोशू 9:17; 18:25)। [30]RSV में सप्तति अनुवाद का अनुसरण करते हुए, 2 शमूएल 4:6 का अनुवाद, ''और देखो, घर की द्वारपालिन गेहूं बीन रही थी, परन्तु उसे झपकी आ गई और वह सो गई; सो रेकाब और उसका भाई बाना चुपके से घर में घुस आए।''

[31]दाऊद का मानना था कि कमज़ोर होने के बावजूद ईशबोशेत मूलत: एक भला आदमी था। [32]यह दाऊद का तीसरा अभिषेक था। [33]बाइबल बताती है कि हेब्रोन में आने वालों की संख्या 340,000 थी, जिसे न मानने का कोई कारण नहीं है। परन्तु यह सम्भव है कि उनके प्रतिनिधि ही आए हों। जो भी हो परन्तु भीड़ काफी थी! [34]उत्पत्ति 14:18से। ''सालेम'' ''यरूशलेम'' का संक्षिप्त रूप था (नोट भ.सं. 76:2)। [35]यरूशलेम को कभी-कभी ''यबूस'' भी कहा जाता था (न्यायियों 19:10; 1 इतिहास 11:4)। [36]दाऊद द्वारा कब्ज़ा करने के समय यरूशलेम के केवल आठ या नौ एकड़ पर ही कब्ज़ा हुआ था। ''मिल्लो'' शब्द पर ध्यान दें (2 शमूएल 5:9); यह एक इब्रानी क्रिया से लिया गया है जिसका अर्थ ''भरना'' है। यह भरना भूमि या पत्थरों में से कोई भी हो सकता है, जिससे और विस्तार हो सके। [37]जहां तक हम जानते हैं, दाऊद के विषय में ये शब्द ज्यों के त्यों नहीं कहे गए थे, परन्तु ज्योंकि शाऊल ने उस आज्ञा को पूरा नहीं किया, इस लिए ये शब्द शाऊल के स्थान पर आने वाले किसी के लिए भी खरे उतरते हैं। [38]1 इतिहास 14:9 कहता है कि पलिश्तियों ने तराई पर *हमला* कर दिया। [39]जोसेफस ने कहा है कि उन्होंने दूसरे राजाओं की सहायता मांगी और यह कि उनकी दूसरी सेना पहली सेना से तीन गुना बड़ी थी। [40]जोसेफस कहता कि पेड़ हिले और उनकी सर्र-सर्र की आवाज़ आई परन्तुहवा नहीं चली।

[41]हमें परोक्ष रूप से सूचित किया गया है कि दाऊद ने हेब्रोन में रहते समय चार और पत्नियों से विवाह किया था। [42]हमें यह भी बताया गया है कि ''उसने यरूशेलम की और रखेलियां रख लीं और पत्नियां बना लीं।'' लेखक ने दाऊद के बहुपत्नि व्यवहार की सीधी आलोचना नहीं की जो व्यवस्थाविवरण 17:17 के विपरीत थी, परन्तुकहानी के आगे बढ़ने के साथ, उसने विनाशकारी परिणामों को स्वयं बोलने दिया।

[43]मीकल और दाऊद की कहानी यह जोर देने के लिए कि उपेक्षित सम्बन्ध प्रेम को खत्म कर सकते हैं, यहां जोड़ी जा सकती है। [44]1 इतिहास 13:1 में 1 इतिहास 11:1-9 का अनुसरण किया गया है; बीच की आयतें ''दाऊद के शूरवीरों'' के बारे में बताती हैं। 1 इतिहास के अनुसार, हीराम द्वारा दाऊद को पहचान देना, पलिश्तियों के साथ दाऊद का युद्ध, और अन्य घटनाएं यरूशलेम में सन्दूक को लाने के दाऊद के पहले प्रयास से (1 इतिहास 13) और अंत में सन्दूक लाने में उसके सफल होने के बीच (1 इतिहास 15) हुईं। [45]हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए चाहे वे सरकार में हों (1 तीमुथियुस 2:1, 2), कलीसिया में हों (इब्रानियों 13:17, 18) या घर में हों। [46]सरकार में हो (रोमियों 13:1से), या कलीसिया में (इब्रानियों 13:17), या घर में (तु. इफिसियों 5:22; 6:1-3)हमें आज्ञा मानने तथा सहयोग करने वाले होना चाहिए।